जीवन है उपहार कर लो यह स्वीकार
प्रभुसे मिला है इतना प्यार
हो जाऊ उन पर बलिहार
एक एक पल बना दिया यादगार
निकले दिल से शुक्रिया बारम्बार
मुझे मिला है अब सर्व संबंधो का अब एक से प्यार
क्यों बुद्धि को भटकाओ देहधारियों में बेकार
रोज़ करता मुरली सुना कर वो मेरा सच्चा श्रृंगार
21जन्म में भी न खुटेगा ऐसा भर दिया मेरा संसार
संगम को बना दिया परमात्म मिलन का सुन्दर यादगार
कल्प- कल्प मिलते रहेंगे किया है हमनें उनसे यह इकरार
छोड़ेंगे 5 विकार और बनेंगे उनके गले का हार

ॐ शांति